

लड़ते बकरे और सियार-पंचतंत्र

एक दिन एक सियार किसी गाँव से गुजर रहा था। उसने गाँव के बाजार के पास लोगों की एक भीड़ देखी। कौतूहलवश वह सियार भीड़ के पास यह देखने गया कि क्या हो रहा है। सियार ने वहां देखा कि दो बकरे आपस में लड़ाई कर रहे थे। दोनों ही बकरे काफी तगड़े थे इसलिए उनमें जबरदस्त लड़ाई हो रही थी। सभी लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे और तालियां बजा रहे थे। दोनों बकरे बुरी तरह से लहलुहान हो चुके थे और सड़क पर भी खून बह रहा था।

जब सियार ने इतना सारा ताजा खून देखा तो अपने आप को रोक नहीं पाया। वह तो बस उस ताजे खून का स्वाद लेना चाहता था और बकरों पर अपना हाथ साफ़ करना चाहता था। सियार ने आव देखा न ताव और बकरों पर टूट पड़ा। लेकिन दोनों बकरे बहुत ताकतवर थे। उन्होंने सियार की जमकर धुनाई कर दी जिससे सियार वहीं पर ढेर हो गया।

सीख : लालच से प्रेरित होकर कोई भी अनावश्यक कदम नहीं उठाना चाहिए और कोई कदम उठाने से पहले भलीभांति सोच लेना चाहिए।

अनुवाद - कुलदीप धर

लड्डे गकरे भियार

एक दिन एक भियार गाँव में गुल्लक रखा था। उभने गाँव के गल्लक के पाभ लेगे की एक छीठ टोपी। केंदुरुलवम वरु भियार छीठ के पाभ वरु टोपने गथा कि कृ दे ररुनै। भियार ने वरु टोपा कि दे गकरे मुपम में लरुन कर ररुनै। देने की गकरे कान्नी उगरे वे डभ लिचे उन में एगरेडमु लरुनै दे रनी थी। मनी लेग ऐर ऐर में गिल्ला ररुनै वे मुग उलिचं गर ररुनै वे देने गकरे वरी उररु में लरुलरुन दे एके वे मुग मरुक पर छी पुन गरु ररुनै था।

एग भियार ने उउना भाग उरु पुन टोपा उे मुपने मुप के रेक नकी पाथा। वरु उे गभ उभ उरु पुन का भ्रुन लेना गारुन था। भियार ने मुव टोपा न उरु टोपा उर गकरे पर एए परु। लेकिन देने गकरे उकउवर वे। उनके ने भियार की एभ कर पुनरं कर पी एभ में भियार वनी टेर दे गथा।

भीपः लालग में प्रिउ केकर केरे छी मनावमु कडभ नकी उरुन गारिग मुग केरे कडभ उरुने में परुले छलीछंति मेग लेना गारिग॥

मनुवाड - कुलदीप एर